



पाठ-तीन

## हज़रत महम्मद



खृष्ट 570 को अरब भूमि पर मक्का में हज़रत महम्मद नाम का एक लड़का पैदा हुआ था। महम्मद के अम्मीज़ान अमीना बेगम तथा अब्बाजान आब्दुल्लाह को मालूम नहीं था कि वह बच्चा अरब भूमि पर ही नहीं बल्कि सारी दुनिया में प्रकाशमान होगा। अफ़सोस इस बात का है कि उसकी कम उम्र में ही उसके अब्बाजान को खुदा ने इस जमीन से उठा लिया। अगर उसके अब्बाजान जिन्दा रहते तो शायद हज़रत के कार्यों में दखल डाल देते। उसने दो साल अपनी अम्मीजान का स्नेह चखा। इसके बाद वह भी खुदा की प्यारी हो गई। अब हज़रत ने अपने चाचा के पास रहकर जिन्दगी के दुख भरे कदमों को नापा। उसने जिन्दगी के मासूम

वक्त को एक गड़रिया का काम करके बिताया। इस दौरान उसने दुखों को बहुत करीब से देखा। करोबार के लिए वह अपने चाचा के साथ, सीरिया, दामस्कस, बागदाद घूम आया और वहाँ का हाल भी देख आया। रास्ते पर डाकुओं द्वारा किए लूट-पाट, झूठ-फरेब, कत्ल और बेमजहबी कामों को देखकर उसे असीम दुख हुआ।

उस समय अरब में एक नेक और ईमानदार विधवा रहती थी। उसका नाम था खादिजा। एक विधवा होकर भी वह कुदरत के दबाव में आकर ऐसा कोई भी कार्य नहीं करती थी जो मज़हब के विरुद्ध हो। हज़रत बहुत ईमानदार था, हर काम उसने ईमानदारी से किया। उसकी ईमानदारी को देखकर लोग उसे 'अल-ईमान' कहने लगे। खादिजा ने उसको अपने नौकर के रूप में रखा। शुरू से ही हज़रत स्वभाव में न्यायप्रिय था। एक बार काबा की मस्जिद में एक पत्थर की स्थापना को लेकर कई फिरकों के बीच झगड़ा होने लगा। सब लोग अपने अपने नेताओं से वह पवित्र पत्थर रखवाने की कोशिश कर रहे थे। इसकी वजह से वहाँ दंगा होने की सम्भावना हो रही थी। अगर दंगा होता तो बहुत लोग मारे जाते। मगर ऐसा



नहीं हुआ। हज़रत महम्मद ने वैसा नहीं होने दिया। उसने एक कपड़ा बिछा दिया और इस पर वह पत्थर रखवा दिया। उसने लोगों से कहा – “ आप लोग इस कपड़े को पकड़कर पत्थर को उठाइए और ले जाकर उसी मूल स्थान पर रखिए जो इसे रखने के लिए तैयार किया गया है। ” इस प्रकार हर नेता के हाथ उस पत्थर की स्थापना में लगवा दिए।



हज़रत महम्मद की बुद्धिमानी और ईमानदारी को देखकर खादिजा ने उससे शादी करली कुछ दिनों के बाद जब एक दिन हज़रत रजाई ओढ़ कर सो रहा था तब उसे एक आवाज सुनाई दी – “ तू क्यों सो रहा है ? अशिक्षित लोगों की अज्ञानता को मिटा दे। खुदा हमेशा तेरे साथ रहेगा। ”

उसी दिन से उसने सांसारिक बन्धनों को तोड़कर लोगों को उपदेश देना शुरू किया। उसने एक नया धर्म अपनाया। उस नए धर्म का नाम ‘इस्लाम’ रखा। उसके मानव-कल्याणकारी भावनाओं को देखकर बहुत लोग उसके शिष्य बन गए। उसने अरब के अलग-अलग विचारवाले लोगों को एक ही सूत्र में पिरोकर उनके मन में एक साथ रहने की भावना पैदा कराई। उसने बताया – “ ईश्वर एक है। इस दुनिया में ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ खुदा न हो। ” लेकिन कुछ काफिरों ने गलत इलजाम लगाकर उसके कार्यों को बेमजहबी

कहा और उसे मौत की सजा देने की माँग की। मक्का के लोगों ने महम्मद को बहुत तंग किया जिससे बरदास्त न होकर वह भाग गया। कई सालों के बाद वह फ़ौजी बनकर मक्का में फिर वापस आया।

अरब पहले की तरह दंगाबाजी और कतलबाजी वाली जगह नहीं रही। महम्मद ने मक्का में रहकर दुनिया को चौकानेवाला काम किया। उसने इस्लाम मजहब के जरिए अरब को शान्ति की जगह बना दी। उसके उपदेश थे – “ देश की नारियों को माता तथा बहन समझो, उनकी इज्जत करो, धन की लेन-देन में ब्याज लेना बुरा है, सब इन्सान एक खुदा की औलाद है, हर इन्सान से प्यार करो तो खुदा भी तुमसे प्यार करेगा।” उसके सभी उपदेश इस्लाम धर्म के पवित्र ग्रन्थ ‘कुरान’ में लिखा गया है।

### कठिन शब्दों के अर्थ—

|             |   |                               |
|-------------|---|-------------------------------|
| मासूम       | = | निरपराध, बेगुनाह, पापरहित।    |
| गड़रिया     | = | भेड़-बकरियाँ चरानेवाला।       |
| कारोबार     | = | कार्य-व्यापार।                |
| बेमजहबी     | = | अधार्मिक।                     |
| नेक         | = | अच्छा, उम्दा, भला।            |
| कुदरत       | = | ईश्वर की शक्ति, प्रकृति।      |
| फ़िरकों में | = | समुदायों में।                 |
| दंगा        | = | मार-पीट, लड़ाई-झगड़ा, उपद्रव। |
| काफिर       | = | इस्लाम धर्म को न माननेवाला।   |
| इलज़ाम      | = | दोष, आरोप, अभियोग।            |
| बरदास्त     | = | सहन करने की शक्ति।            |

|        |                                            |
|--------|--------------------------------------------|
| जरिए   | = साधन।                                    |
| ब्याज  | = सूद, मूलधन के अतिरिक्त दिया जानेवाला धन। |
| औलाद   | = संतान, वंशज।                             |
| इन्सान | = आदमी, मनुष्य, मानव।                      |

### प्रश्न-अभ्यास

1. हज़रत महम्मद कहाँ पैदा हुए थे ? उनके माँ-बाप के नाम क्या-क्या थे ?  
उनका बचपन कैसा था ?
2. हज़रत महम्मद को अल-ईमान क्यों कहा गया ?
3. काबा की मस्जिद में झगड़ा क्यों हुआ ? वह झगड़ा किसने और कैसे शान्त कराया ?
4. पवित्र पत्थर संबंधी काबा के झगड़े का वर्णन संक्षेप में लिखिए।
5. विधवा खादिजा ने हज़रत महम्मद से शादी क्यों की ?
6. सोते समय हज़रत महम्मद ने क्या आवाज सुनी ? उसने लोगों से क्या बताया ?
7. हज़रत महम्मद का उपदेश क्या था ?
8. हज़रत महम्मद की जीवनी संक्षेप में लिखिए।
9. सिख, ईसाई, बौद्ध धर्मों के गुरुओं और धार्मिक ग्रंथों के नाम लिखिए।
10. इस्लाम धर्म की पुस्तकें पढ़िए और उस धर्म के बारे में दस वाक्य लिखिए।

\* \* \* \* \*